क्या है फेमिनिज्म ?

विनीता सहगल

वो दुनियाँ जहाँ किसी स्त्री को वो समान अधिकार और कर्तव्य मिलते है जो पुरुषों को मिलते है। जिसप्रकार स्त्रियों को यह नही सिखाया जाता कि हर पुरुष को अपना बाप,बेटा या भाई समझो और इस लिए उसका सम्मान करो वैसे ही पुरुष को यह न बोला जाए कि स्त्री को माँ, बेटी या बहन समझो और इसलिए उसकी इज़्ज़त का ध्यान रखो। जहाँ स्त्री को उसी प्रकार इज़्ज़त मिल जाए जैसे पुरुषों को उनके पुरुष मात्र होने से इज़्ज़त मिल जाती है। जहाँ उनके बीच की विभिन्नताओ को उनकी कमजोरी या मजाक का विषय न बनाया जाए।

स्त्री पुरुष के बीच की विभिन्नताएँ उनके विकास का क्रम है।

आपको रास्ते याद रहते है हमे भी रहते है पर दोनों के रास्ते याद रखने का नक्शा बनाने का तरीका अलग है। इसका यह मतलब नही की आपका तरीका या हमारा तरीका बेहतर है इसका मतलब है जरूरत के अनुरूप वो तरीका तैयार हुआ।

हमे जंगलो में उन पेड़ पौधों को याद रखना होता था जिनसे हम आहार खोज लाती थी और आपको लंबी दूरियाँ क्योंकि शिकार को आपको दूर तक जाना होता था तो आपको वो ज्यादा स्थायी चिह्नों को याद रखना होता था जो वक़्त के साथ न बदले जैसे तारो की स्थिति, दिशा ज्ञान।

पर हम दोनों घर पहुँचते थे अपने परिवार के पास। इसमें आपका हमारा यह कह मजाक बनाना की यह कौन सा तरीका है रास्ता याद करने का की वहाँ वो भूरी गाय रहती है बस उसी के बगल वाले घर मे जाना है। हम उसी निशान पर उस घर तक जाते आये है हमे नही जरूरत पड़ी जानने की, कि वो कौन से अक्षांश पर है।

हम जिस तरह रंगों को पहचानते आप नही पहचान सकते क्योंकि उन्ही रंगों पर आपका और हमारा जीवन निर्भर करता था उन्ही से हमे उन कंदमूलो और बेरियो को चुनने की समझ मिलती थी जिन्हें खा कर आप बीमार न हो जाये या दूसरे दिन का सूरज ने देख पाए।

आज भी अधिकतर पुरुषों का पसंदीदा रंग क्या होता है? काला, नीला या लाल। वो लाल जो आपकी जीत की निशानी होता था आपके शिकार की उपलब्धि की निशानी होता था। इसके लिए भी स्त्री का मजाक बनाया जाना इनको तो पिंक में भी वो वाला पिंक पसंद और वो वाला नही। इन्हें तो अभी रंग पसंद करने में घंटो लगेंगे।

आपने हमारी खूबियों को भी हमारी कमियाँ और मजाक का विषय बना दिया।

माँ बनने की हमारी वो क्षमता जिसके वजह से हमारा समाज अस्तित्व में आया इतनी जनसंख्या बड़ी वो भी आपने हमारे लिए कमजोरी और पीछे रहने की वजह बना दी।

स्त्री के सारे गुणों को उसके माँ बनने तक सीमित कर दिया और फिर उसी खूबी के लिए उसे एक कमजोर जीव बता दिया गया।

आप जिस प्रकार हर स्त्री को बिस्तर गर्म करने की वस्तु समझ सकते है जो कि आपके क्रमिक विकास का अंग है आपको प्रकृति ने संचित करने के लिए नही निर्मित किया। स्त्री नही समझ सकती क्योंकि जब वो पुरुष से प्रेम करती है तो वो उसको संचित कर सकने की काबलियत रखती है और वो काबलियत उसे हर पुरुष को बिस्तर तक की वस्तु बनाने से रोकती है।

आप स्त्रियों को अधिक से अधिक स्त्रियों को वीर्यदान कर अपने जीन्स आगे पहुचना चाहते हैं परंतु स्त्री किसी एक ही पुरुष के वीर्य का संचय कर 2-4-10 सालो के लिए एक नए जीव से बंध जाती है इसलिए उसके लिए वो पुरुष का चुनाव करना कही ज्यादा बड़ा मुद्दा है आपके स्त्री के चुनाव से।

खैर यह सब तो वो कुछ विभिन्नताएँ है जो आपको हमे अलग करती है पर फेमिनिज्म क्या है फेमिनिज्म है इन विभन्नताओ को अपनाते हुए एक दूसरे का सिर्फ जीव मात्र होने के लिए उन्हें सम्मान देना और जगह देना।

फेमिनिज्म का मतलब यह नही की स्त्री पुरुष से ज्यादा ताकतवर हो जाये शारीरिक रूप से। अरें उसकी जरूरत क्या है कोई दंगल करना है? युद्ध भूमि पर जा रहे हैं जहाँ हमारी ताकते टकराने वाली है?

जब आप ताकतवर है तो मेरा कोमल होना सही ही तो है आप मुझे संरक्षण दे देंगे जब कोई विपदा आएगी। बस वो विपदा आप ही न हो मेरे लिए। स्त्री को प्राकृतिक विपदाओं से बचने के लिए आपकी ताकत की जरूरत है परन्तु वो तो आपसे ही असुरक्षित हुई रहती है। क्योंकि आपने उसके लिए खुद को ही सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदा बना दिया है।

भारी सामान आप उठा सकते है इसका न तो यह मतलब है कि वो आपसे गुलामी करा रही है ना इसका यह मतलब है कि आप कोई महान काम कर रहे हैं बस आपके लिए वो काम उसके करने से ज्यादा आसान है। हम यहाँ एक दूसरे की मुश्किलें कम करने को ही तो है ना!

वो आपके लिए आपका रहना आसान बना सकती है इसलिए नही की वो गुलाम है आपकी बल्कि इसलिए कि वो उस कोमलता से ज्यादा सोच पाती है जहाँ वो आपके आराम के लिए खुद का आराम छोड़ सके।

हम यहाँ एक दूसरे का जीवन खूबसूरत बनाने के लिए ही तो है!

मगर हम कर रहे हैं एक दूसरे से मुकाबला, यह दिखाने को की बेहतर कौन है जबकि यहाँ बेहतर हो कर जीत कर कुछ हासिल नही होगा। हार जीत प्रेम और सम्मान पैदा नही करती प्रतिस्पर्द्धा पैदा करती है।

हमे तो मित्रता चाहिए प्रेम चाहिए और जीवन आरामदायक चाहिए। जहाँ एक दूसरे के लिए सम्मान हो। आप इसलिए मेरी इज़्ज़त न करे कि मैं आपकी रिश्ते में माँ, बहन, बेटी लगती हूँ। सड़क पर चलती मैं आपके सम्मान के लिए उसी तरह अधिकृत हूँ जिस तरह आप होते है।

हो सकता है जब आप मुझसे रास्ता पूछे तो मुझे एक मिनट को दाया बायाँ चेक करने के लिए अपने हाथ हिला कर देखने पड़े पर अगर मुझे वो जगह पता होगी तो मैं आपको उसी तरह सही रास्ता बता दूंगी जैसे आप मुझे बताते।

मुझे कोई सीट इसलिए मत दीजिये की मैं महिला हूँ बल्कि इसलिए दीजिये की मुझे उसकी आव्यशकता है जैसे मैं आपको दे दूँगी अगर मुझे लगे कि आपको उसकी अधिक आव्यशकता है। ठीक है हर महीने वो चार दिन आते है पर वो चार दिन 4 दिन पहले से शुरू होते है और जाने में और 4 दिन लगाते है। वो हमें शारीरिक थकान,मानसिक अवसाद देते है पर वो कमी नही है आवश्यकता है मानवजाति की आवश्यकता ताकि आपके और मेरे जैसे और भी जीव इस दुनिया मे आसके इसलिए उन्हें हमारी कमज़ोरी या बहाना मत समझिए बल्कि आपके अस्तित्व की वजह समझते हुए उन 10-15 दिनों को सम्मान दीजिये। आपको पता है जिस तरह आप पुरुष हम स्त्रियों को मोलेस्ट करते है ना हम भी कर सकते है फिर आपको भी अपने अंगों को उसी तरह ढकना पड़ेगा जैसे हम आप लोगो को देख कॉन्शियस हो जाते। इसलिए यह लड़ाई एक दूसरे को अपमानित करने की नही सम्मानित करने की है आप मेरे साथ और मैं आपके साथ कितने कम्फ़र्टेबल हो सकते है उसकी है। जहाँ मैं सिर्फ एक शरीर नही हूँ और आप सिर्फ उस शरीर के उपभोग कर्ता।

बाकी बाज़ार है कल भी था आज भी है और शायद हमेशा रहेगा क्योंकि कुछ बाते सब नही समझते सबसे समझने की उम्मीद भी नही की जाती परन्तु कोशिश यह है कि इस समानता और कर्तव्यों की खाई को जितना पाटा जा सकता है पाट दिया जाए ताकि आने वाले हमारे बच्चे एक बेहतरीन माहौल में जी सके।

जहाँ एक लड़का एक लड़की के कंधे पर सिर रख रो सके फूट फूट कर और लड़की उसे वात्सल्य से भर सके और इसके लिए उसे उसकी माँ न होना पड़े। दोस्त,पत्नी, प्रेमिका कुछ भी हो यहाँ कुछ रिश्ते इसलिए गिनाए की दिल का हाल तो अपनो के सामने ही रखोगे न और वो हाल रखते हुए न तो आपको ग्लानि अनुभव हो न आपके अहम को चोट पहुँचे।

जहाँ कोई लड़की बिना यह सोचे कि कही यह पुरुष उसके शरीर का उपयोग तो नही कर लेगा उसके साथ अकेले में बैठ सके कही भी जा सके और उन चीज़ों को सीख सके जिसमे वो उसको खुद से बेहतर लगता। यहाँ खुद को पहले से बेहतर बनाने की जंग है एक दूसरे से बेहतर नही। पहले से बेहतर हम तभी हो सकते जब हम एक दूसरे के इतने करीब आये जहाँ आप मुझसे और मैं आपसे वो सब सीख सके जो हमे सृष्टि की सबसे महान कृतियाँ बनाती है। हमारी पूर्णता हमारे एक होने में है। नही तो अकेले अकेले तो हम सदियों से जी रहे हैं।

श्रम

व्यापार का साधन बन चुकी ट्रेड यूनियनें संघर्ष नहीं केवल दिखावा कर सकती हैं

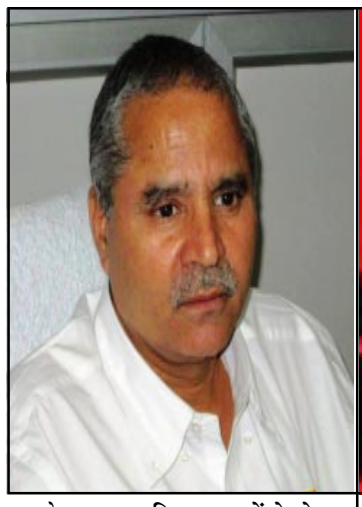

सुरेन्द्र लाल : बिना मजदूरों के नेता

अब मालिकान से पूछकर भाषण देते हैं श्रमिक नेता

सतीश कुमार

एस्कॉर्टस यूनियन के प्रधान रहते बीरम सिंह के द्वारा कराये गये त्रिवार्षिक समझौते सेश्रमिकों को जो लाभ हुआ था उतना न तो पहले कभी हुआ था और न उनके बाद हुआ। इसी से परेशान प्रबंधन ने उन्हें पहले सस्पेंड और फ़िर हिसाब लेने पर मजबूर कर दिया था। सस्पेंशन के दौरान महीनो तक चली घरेलू जांच के दौरान उनका सहयोग कर रहे एसडी त्यागी ने उनकी पुरजोर वकालत तो की लेकिन जब बात बनती नज़र नहीं आई तो उन्होंने बर्खास्त होकर संघर्ष करने की बजाय हिसाब लेकर फ़ारिग होने की सलाह दी। इसी दौरान हुए यूनियन के चुनाव में भूपेंदर सिंह प्रधान चुने गये क्योंकि सस्पेंशन की हालत में बीरम सिंह चुनाव नहीं लड़ सकते थे और भूपेंद्र किसी कीमत पर बीरम के संघर्ष को समर्थन देने वाले नहीं थे। कारण समझना कठिन नहीं।

ट्रेड यूनियन में नेता लोग प्रबन्धन से सौदेबाज़ी तो करते हैं क्योंकि यूनियन बनाई ही सौदेबाज़ी के लिये जाती है, परन्तु यह सौदेबाज़ी तमाम श्रमिकों की ओर से उनके हितों के लिये की जाती है न कि किसी व्यक्ति विशेष के लिये। इस सौदेबाज़ी में सौदा प्रबन्धन व श्रमिकों के बीच होता है जिसका यूनियन नेतृत्व करती है, इसके द्वारा यह तय होता है कि प्रबन्धन श्रमिकों को क्या देंगे और उसके बदले श्रमिक अपनी कम्पनी को क्या देंगे, इसी को सामूहिक सौदेबाज़ी कहा गया है जो पूरी तरह से वैध एवं कानूनी होती है जिसका बाकायदा लिखित दस्तावेज़ बनता है, जिसे पुख्ता करने के लिये श्रम तथा समझौता अधिकारी की मुहर भी लगवाई जा सकती है।

परन्तु मामला अब बिगड़ता जा रहा है। यूनियन नेता श्रमिकों के सामूहिक हित-लाभ की अपेक्षा अपने निजी हितों को अधिक प्राथमिकता देने लगे हैं। गिरावट एवं धोखा-धड़ी का स्तर तो यहां तक आ चुका है कि नेता लोग गेट मीटिंग में 'आग उगलने' से पहले मालिकान से मिल कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना कर आते हैं कि गेट पर 'आग' नहीं उगलेंगे, मालिकान को गालियां नहीं देंगे तो यह जनता हमसे बंधी कैसे रहेगी, हम जो कुछ भी कहेंगे उसका बुरा मत मानना, हम दिल से आपके साथ हैं, आदि-आदि। इसके बाद नेतागण आकर श्रमिकों के सामने धुंआधार एवं लच्छेदार भाषण देकर भोले-भाले श्रमिकों की तालियां बटोरने के साथ-साथ अपनी ज़िन्दाबाद के नारे सुन कर प्रफुल्ल हो जाते हैं। यह सारी हकीकत किसी एक यूनियन या एक नेता की नहीं बल्कि अधिकांश यूनियनों के अधिकांश नेताओं की है, कोई विरली यूनियन एवं उसका नेता इस कपट से बचा होगा।

'धंधा' बन चुके ट्रेड यूनियन में नौबत यहां तक आ चुकी है कि यूनियन लीडर कम्पनी का प्रबन्धन और कम्पनी मालिक यूनियन चलाने लगे हैं। काफ़ी पहले 70-90 दशक में करीब 6000 श्रमिकों द्वारा चलाई जाने वाली इस्ट इन्डिया टेक्सटाइल कम्पनी के इस यूनियन के नेता नज़र मोहम्मद का रूतबा कम्पनी के मैनेजर से कम न था, किसको नौकरी पर रखना है, किसको निकालना है, किस वेंडर से क्या खरीदना है क्या बेचना है, तमाम फ़सलों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी। दूसरी ओर श्रमिकों को क्या देना है, कितना देना है, कब देना है किसके खिलाफ़ क्या करना है ये सारे निर्णय तत्कालीन जीएम उमेदमल जैन लिया करते थे। हैरान करने वाली बात यह भी रही कि कम्पनी गेट पर लाल झंडा एटक का लगा होता था जिसके वे खुदमुखत्यार नेता थे।

प्रबन्धन से मेल-जोल बढ़ाना और एक 'जिम्मेवार' ट्रेड यूनियन की भूमिका निभाना कम्पनी की उन्नत्ति के लिये जरूरी होती है, परन्तु यह भूमिका जब श्रमिकों की कीमत पर निभाई जाने लगे तो ट्रेड यूनियन आन्दोलन के लिये घातक हो जाती है। एक बार शुरू हो जाने के बाद यह बीमारी छूत की तरह दूसरी यूनियनों में फ़ैलने लगती है। एस्कॉर्टस यूनियन भी इससे बहुत ज्यादा नहीं तो कुछ हद तक संक्रमित हुए बिना नहीं रह सकी। आन्दोलन का नियम है कि वह या तो आगे को बढता है या पीछे को फ़िसलने लगता है यानी एक जगह खड़ा नहीं रह सकता और जब फ़िसलने लगता है तो फ़िर नीचे की ओर फ़िसलता ही चला चला जाता है।

एस्कॉर्टस यूनियन में यूं तो आरोप-प्रत्यारोप कई नेताओं पर लगते रहे हैं परन्तु जेसीबी प्लांट की ओर से आने वाले नेता सुरेन्द्र लाल बीसियों वर्ष तक यूनियन के कोषाध्यक्ष रहे हैं। बतौर वेल्डर कम्पनी में नौकरी शुरू करने वाले लाल की हैसियत आज कम्पनी के डायरेक्टर से कम नहीं है। उनकी सेवा में कम्पनी की ओर से एक बड़ी उम्दा कार के साथ एक ड्राइवर भी दिया गया है जिसका वेतन 80 000 से ऊपर ही है क्योंकि वह कम्पनी का नियमित श्रमिक है। इसके अलावा वह एस्कॉर्टस यूनियन के पूर्व प्रधान का भाई भी है। इस नाते वह ड्राइवरी के अतिरिक्त 'संगठन' में भी सहयोग करता है।

जानकार बताते हैं कि सेवा निवृत होने के बावजूद कम्पनी ने उन्हें सेवा से विस्तार भी दिया। सेवा विस्तार समाप्त होने के बाद भी कम्पनी ने उन्हें बतौर सलाहकार या ऐसा ही कुछ पद देकर नौकरी पर रखा हुआ है जिस नाते उन्हें वेतन व अन्य सभी सुविधायें उपलब्ध हैं। दरअसल कम्पनी यह सब उनके लिये क्यों न करें जब उनके नियंत्रण में कम्पनी को कभी कोई श्रमिक समस्या नहीं आती, कम्पनी ठीक से फल-फूल रही है। यूनियन पर अपनी मजबूत पकड़ बनाये रखने के लिये वे श्रमिकों को हर समझौते में अच्छा-खासा पैकेज दिला देते हैं। लेकिन यहीं पर एक पेच है। यह अच्छा-खासा पैकेज केवल श्रमिकों, करीब एक चौथाई श्रमिकों के लिये ही है जिन्हें नियमित एवं पक्का श्रमिक कहा जाता है। यूनियन की सदस्यता भी इन्हीं के पास रहती है। इन्हीं के वोटों से ये नेता बने रहते हैं। ये श्रमिक सुरेन्द्र लाल के अहसानमंद क्यों न हों जब लाख-लाख रुपये तक वेतन पाते हों। जबकि वही काम करने वाले 75 प्रतिशत श्रमिक जिन्हें कैजुअल एवं ठेकेदारी श्रमिक कहा जाता है, मात्र 15-20 हजार तक ही पाते हों।

स्वत: सिद्ध होता है कि ठेकेदारी में अब कैजुअल काम करने वालों की मेहनत के बल पर कम्पनी फ़ल-फूल रही है और यूनियन सदस्यता वाले चन्द श्रमिक मौज लूट रहे हैं। इसी को तो कहा जाता है 'सहयोग', कम्पनी भी फले-फूले और नेता भी। इसी सहयोग के चलते कम्पनी में बिना लाल की मर्जी के न तो कोई भर्ती हो सकता है और न ही कोई वेंडर टिक सकता। इसका लाभ उठाते हुए लाल ने जीवन बीमा का भी बहुत अच्छा कारोबार किया है। लाल निरे स्वार्थी भी नहीं हैं, वे अपने इस रसूख एवं संसाधन का उपयोग ट्रेड यूनियन आन्दोलन के लिये भी करते हैं। जब भी एचएमएस की राज्य कॉन्फ्रेंस होती है तो लाखों रुपये जुटाने का दायित्व भी लाल ही निभाते हैं। और तो और एचएमएस के राष्ट्रीय दिल्ली स्थित कार्यालय के निर्माण हेतु भी इन्होंने 18-20 लाख रुपये जुटा कर उन्हें दिये थे। अपनी एचएमएस के लिये भले ही ठौर-ठिकाना न हो पर केन्द्रीय कार्यालय के लिये इतना बड़ा सहयोग उनकी त्याग एवं सेवा की भावना को दर्शाता है।

धन एकत्र करने के लिये वे ग़रीब मज़दूरों को परेशान नहीं करते क्योंकि उनसे चंदा लेने पर वे भी तो बदले में कुछ चाहेंगे, इसलिये वे कम्पनी से व्यापार करने वाले वेंडरों आदि से ही सोवनियर के लिये विज्ञापनों के माध्यम से ठीक-ठाक वसूली कर लेते हैं।

अपनी इसी कार्यशैली के चलते सुरेन्द्र लाल व उनके परम सहयोगी एसडी त्यागी हरियाणा राज्य एचएमएस के बड़े नेता होने के साथ-साथ एचएमएस के राष्ट्रीय स्तर पर भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। एचएमएस की ओर से विदेशों को जाने वाले प्रतिनिधि मंडल हों अथवा भविष्यनिधि जैसे विभागों में एचएमएस का प्रतिनिधित्व करने का दायित्व भी इन्हीं के नाजुक कंधों पर डाला जाता है। उच्च स्तरों पर तो बेशक ये बड़े नेता हैं परन्तु जमीनी स्तर पर मामला लगभग साफ़ है।

(सम्पादक : मजदूर मोर्चा)